भजन डायरी

श्री अम्बाराम जी मालवीय

ग्राम	:	बजेगढ मुरम्या
पोस्ट	-	चौबारा धीरा
तहसील	-	टौंकखुर्द
जिला	-	देवास !म.प्र.!

भजन क्रमांक

सतनाम

नं० 11

टेक:- धन्य तेरी करतारकला का पार नहीं कोई पाता है ।

चरण 1. निराकार भी होकर स्वामी सबका पालन करता है ।

निराकर निरबन्धन स्वामी जनम मरण नहीं धरता है ।

चरण 2. ऋषि मुनि और सन्त महात्मा निश दिन ध्यान लगाता है ।

चार खान चौरासी के माही तु नजरएक आता है ।

चरण 3. तेरी कला का खेल निराला विरला महरम पाता है ।

जापर कृपा भई निज तेरी वाको दरशन दिखाता है ।।

चरण 4. पत्ते पत्ते पर रोशनी तेरी बिजली से चमक दिखाता है ।

चकीत भया मन बुद्धि तेरी जीवादास गुण गाता है ।।

टेक- → धन्य तेरी करतारकला का पार नहीं कोई पाता है । टेक

भजन क्रमांक

नं० 12 टेक गुरु बिन कैसे पावोगा रे करो अगम निगम सैर रे ।। टेक

चरण 1. हाँ के भाई रे नहीं सड़क ने ~~[illegible]~~ छुकड़ा वहाँ है ।

नहीं है झीनी-झीनी गैल गैल कहाँ पावोगा रे ।।

करो अगम निगम की सैर ।

चरण 2. हाँ के भाई रे नहीं बैंड नहीं बाजा वहाँ है ।

नहीं छतीक्या राग कहाँ पावोगा रे ।। करो अगम निगमकी सैर ।।

चरण 3. हाँ के भाई रे नहीं महल नहीं खम्बा वहाँ है ।

नही धरती आकाश वहाँ कहाँ जावगा रे ।। करो अगम निगम की सैर ...

चरण 4. हाँ के भाई नहीं सुरज नहीं चंदा वहाँ है ।

नहीं झील मिल ज्योत कहाँ पावगा रे ।। करो अगम निगम की सैर ...

चरण 5. हाँ के भाई रे कहे कबीर घेर नरा वो है ।

म्हाने सतगुरु मिल गया पुरा परम पद पावगा रे करो अगम निगम की सैर ...

टे. → 6 गुरु बिन कैसे पावगा रे करो अगम निगम की सैर ।

भजन क्रमांक 3

टेक: गुरु तरी का देव मेरे मन भावे ×2
गुरु काटे करम की जाल जीव तुख पावे ।। टेक

चरण 1. यह है गुरु जी की तैन तमझकर ध्यावे ।
वो नर चतुर तुजान परमपद पावे ।। टेक

चरण 2. इगला पिंगला नार तुखमना को ध्यावे तुखमना को ध्यावे ।
अर्ध उर्ध का बीज मन ठहरावे ।।

चरण 3. एक अखंडीत नाथ चरा-चर ध्यावे । चराचर ध्यावे ।
तकल ब्रम्ह का आशीर्वाद न्यु गावे ।।

चरण 4. 7 बोले ईश्वर दात भरम कै भगावे । भरम कै भगावे ।
शीतल शब्द के माय जीव तुख पावे ।।

भजन क्रमांक 4

टेक : इनी काया नगर के माय अमी रत टपकता ।
इनी भंवर के माय अमी रत टपकता ।। टेक

चरण 1. बारह बोदा तोलन तोदा तिरवेणी टपकता । दाता
घर तीर की गम ना पावे बाहर क्यों भटकता ।। हरि रत टपकता..

चरण 2. पाँच ने मारी पच्चीत ने पी लो ।
घाट-घाट न बुन्दे ।।दाता
अनघड देव की कर लो तेवा ।
स्वातन श्वात रटन्ता ।। हरि रत टपकता

चरण 3 बंक नाल की झड पकड लो, आठ कंवल दरशन्ता । दाता
चाँद तूरज न थम कर राखो, मोती मगध चढन्ता । हरि रत टपकता..

चरण 4 पिरतम प्यारा जुग ते न्यारा रती घाट घडन्ता । दाता
भादे रकण मयाराम बोले तुनागढ जाइने चडन्ता ।। हरि रत टपकता ..

टेक : इनी काया नगर के माय अमी रत टपकता ।
इनी भंवर के माय अमी रत टपकता ।। टेक

भजन क्रमांक 5

टेक सदगुरु दाता दीन दयाला, कर किरपा अवतारो मुझे,
कर बन्दगी गुरुदेव की, भव से कर दो पार मुझे ।। टेक

चरण 1. भव सागर दरियाव भरा है । लम्बी धारा दिखे मुझे ।
लोभ, लालच की भंवर पडत है । न्हाने को धिक्कार मुझे ।।

चरण 2. उर्ध उर्ध की नाव बनालो, वा मैं पकड़ बिठालो मुझे ।
सबके सांची है केवटियाँ, पकड हाथ बैठालो मुझे ।।

चरण 3. चार खूंट और चौदह भवन मैं, सबमैं जानू सरदार तुझे ।
अखण्ड जोत का दरशन पाया, मिल गया करतार मुझे ।।

चरण 4. गुरु मछन्दर पुरा मिल गया, जिनैने दी टकसार मुझे ।
गोरखनाथ गुरुनाथ इसी शरण मैं अमर पटा लिखवाया मुझे ।।

भजन क्रमांक 6

टेक :- सन्तो अमल करे तो पावे बिन समझे क्या पावे । टेक
चरण 1. जैसे सुराही लिए हाथ मैं, पल पल दरस दिखावे ।
औरन आगे करन उजरौं, आप म अंधेरे जावे ।। टेक अमल करे तो पावे

चरण 2. बने समाध रुपी घट भतर, दिलबर दिल ही मिलावे ।
पर्दौ उतारो न कबहू नैनन बीच रमावे ।। टेक अमल करे तो पावे

चरण 3 बांचो पौथी ग्रन्थ उचारो, जग को कथा सुनावे ।
जानत नाही कहां हम जैसे, घर जारे धूर बतावे ।। टेक अमल करे तो पावे

चरण 4, ध्रुव, प्रहलाद, नाम देव छाके, मुरदा गढे जिवावे ।
कहे कबीर देख सहना को एक घरे सुलावे ।। टेक अमल करे तो पावे

भजन क्रमांक 7

टेक तेरी काया नगर का कौन धनी, माया मैं लूटे पाँचजनी ।। टेक

चरण 1. पाँच पच्चीस ने रोका बाटा, साधु चढ गये औघट घाटा ।
जाय लिया उन उबठ बाटा, जो न उबरो आप धनी ।। मारग मैं लूटे

~~[illegible]~~
चरण 2. आसा, तृष्णा नदिया भारी, बह गये सन्त बडे भेष धारी ।
जो उभरे सो शरण तुम्हारी, सिर पर चमके शैलानी ।। मारग मैं लूटे ..

चरण 3. बैकर लोटे नेजा धारी, उनकी रैय्यत कौन बिचारी ।
निदेब लुटे तब भारी, चमके रजगुण तीन धनी ।। मारग मैं लुटे ..

चरण 4. वन मैं डल लिये मुनिजन नागा, उसलिए ममता उल्टा टाँगा ।
जा के कान गुरु नी लागा अमीर्वाद सौ आन बनी ।। मारग मैं लुटे ..

चरण 5 मारग बाका पंड दुहेला रामानंद किन्हे तट मेला ।
साहेब कबीर देत जहाँ हेला, सुनिये सिरजन आपधनी ।। मारग मैं लुटे ..

भजन क्रमांक 8

टेक गुरु बिना कोई काम नी आवे कुल अभिमान मिटावे ।
कुल अभिमान मिटावे तन्तो तत लोग पहुँचावे ।।

चरण 1. जतन जतन करी तुत को रे पालू थाने अनेक लाड लडाया हो ।
तन की लकडी तोड चला है । थारा ~~कनक को साथा~~ लुम्बा हाथ लगाया हो ।।

चरण 2. नारी कहे मैं संग चलूँगी ठगने ठग ठग खाया है ।
अन्त समय मुख मोड चली है जरा साथ नहीं देना है ।।

चरण 3. कोडी कोडी मायाजोडी जोडे के महल बनाया है ।
अन्त समय तोहे बाहर कर दिया तनीक रहने नाहीं पाया है ।।

चरण 4. भाई बन्धु तेरे कुटंब कबीला, सब धोखे मैं जीव बंधेला है ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो कर सदगुरु बंध छुडाया है ।।

भजन क्रमांक 9

टेक : चार वेद और पुराण अठारह ब्रम्हा ने पाया पार नहीं ।
निराकार निर्आधार निरंजन उनका कोई आकार नहीं ।। टेक

चरण 1. वो मालिक तो आप ही आप मैं, उनका कुटुम्ब परिवार नहीं
उनके नाम का भरा समुन्दर उस सागर का पार नहीं ।।

चरण 2. वो चादर तो बनी नूर की, उस चादर मैं तार नहीं ।
तार तार सैसार उलझ गया, भूले करे इतबार नहीं ।।

चरण 3. वो साहेब घट घट की जाने, पत्थर को जूहार नहीं ।
उनके नाम की जप लो माला पड़े कालू की मार नहीं ।।

चरण 4. कहे कबीर सुनो भाई साधो गाने मैं कोई सार नहीं ।
चरण कमल की ऐसी महिमा बिन दरपन दीदार नहीं ।।

भजन क्रमांक 10

टेक जो तू आया गगन मण्डल से सीख दिया फिर डरना भी क्या ।
हो जा होशियार सदा गुरु आगे मनसाबीत फिर डरना क्या ।। टेक

चरण 1. उनमुन खेती धनी आगे खेती रात दिन नर सोता भी क्या ।
आवेगा पंछी चुग जावेगा खेती रात दिन नर सोता भी क्या ।।

चरण 2. नौ सौ नदिया बहे घट भीतर सात समन्दर उण्डा भी क्या ।
गुरु गम हौद भरा घट भीतर मूर्ख प्यासा जाता भी क्या ।। हो जा होशी

चरण 3. तेरे घर मैं नार सुखमना, वेश्या के घर जाता भी क्या ।
शीतल वृक्ष की छाया छोडकर कंकड पत्थर पर सोता भी क्या ।। टेक

चरण 4. चित्त चौपड का खेल मंडा है रंग पहचानों पाँचो का ।
गुरु गम पासा हाथ लिया है जीती बाजी हारो भी क्या ।।

चरण 5. काला पित्तल का सोना बना है पल्ला लगा कोई पारस का ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो करम भरम बीच भुलाये क्या ।।

भजन क्रमांक 11

टेक राजाजी अब न रहूँगी तोरी हटकी । टेक

चरण 1. साधु संग मोहि प्यारा लागे लाज गई घूँघट की ।
पीहर मेडता छोडा अपना सुरत निरत दोऊ चटकी ।। टेक

चरण 2. सतगुरु मुकर दिखाया घट का, नाचुँगी दे दे चुटकी ।
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूडी कर की पटकी ।। टेक

चरण 3. मेरा सुहाग अब मोकु दरसा, और न जाने घट की ।
महल किला राणा मोहे न चाहे, सारी रेशम पट की ।। टेक

चरण 4 हुई दिवानी मीरा डोले, केश लटा सब छीटकी ।
राजाजी अब न रहूँगी, तोरी हटकी ।। टेक

भजन क्रमांक 12

टेक एजी ग्र गुरूजी ने दियो अमर नाम गुरु तरीका कोई नहीं ।
जिन घर भरीया खजाना हुआ भरपुर कमी कछु ना रही ।। टेक

चरण 1. मेरा पीछवाडे अमर बेल डाला गगन गया, ।
जारी मालन छीछीगा अमर बेल कुवा माय रत गया ।। टेक

चरण 2 येता जागेगा नरपति ह राज हंसी ने बोलो क्यौं नी ।
तम वालोनी इना हीरदा मैं कपट डोलो क्यौं नी ।। टेक

चरण 3. गुरु जी धरया नी उचपा जाय्या ते जलेनहीं ।
नुगरी कई जाने रैन इन्दारी कई तो जाने भान मैं ।। टेक

चरण 4. गुरु जी उगी आया बली हारी भान मैं चंदा वो तारा छीपी गया ।
ऐसा तपता है जोग पुराण नाम तले दबी गया ।। टेक

चरण 5. गुरुजी छोटासा पेड बजर का छाव मैं बैठो हंस ।
केसो उडता उडू जा समन केडा पंख गडपड गडपड देव ।। टेक

भजन क्रमांक 13

टेक सकल हंस मैं राम हमारा, राम बिना कोई धाम नहीं । राम बीना कोई धाम नहीं
अखण्ड ब्रम्ह मैं जोत का वासा, राम को दुसरा दुजा नहीं ।। टेक

चरण 1 तीन गुण मैं तेज हमारा "पाँच" तत्व मैं जोत जले । पाँच तत्व पर जोत जले
जिनका उजाला चौदह लोक मैं तुरत ग डोर आकाश चढे ।। टेक

चरण 2 हीरा मोतीलाल जवाहरत प्रेम पदारथ परखो यहीं । प्रेम पदारत परखो यहीं
साचा मोती निरखत लेना राम धनी से म्हारी डोर लगी ।। टेक

चरण 3 नाभि कमल से परख लेना, हिरदे कमल बीच फिरे मणि । हिदय कमळ बीच फीरे मणी
अनहद बाजा बाजे शहर मैं ब्रम्हाण पर आवाज चढे ।। टेक

चरण 4 हरि जन होय तो जप लो घट मैं, बाहर जग मैं भटको मति । बाहार जग मैं भटको मती
गुरु प्रताप नानक सा. का शरण है भीतर बोले कोई दूजो नहीं ।। टेक

भजन क्रमांक 14

टैक या गाडी म्हारा देश की जामे सदगुरु बैठा है ।
सदगुरु बैठा है जामे धन गुरु बैठा है ।। टैक

चरण 1. नियम धरम की गाडी बनाई सबका बन्दया रे ।
या गाडी जब चलने लागी ठेठ छबीली रे ।। टैक

चरण 2. दुर देश का चलना रे मजल कराडी रे ।
दुर देश मै संग न साथी वां रैण अंधेरी रे ।। टैक

चरण 3 ओहंग घाट की टेसन उपर सेल मिलेगा रे ।
शिश काट चरणौ मै रख दो तो टिकिट मिलेगा रे ।। टैक

चरण 4 कहे कबीर सुनो भाई साधौ मेरा मन ना जाने रे ।
या गाड़ी म्हारा देश की जा मे सतगुरु बैठा रे ।। टैक

भजन क्रमांक 15

टैक चैत मै चिन्ता म्हाने गुरु बिनु कौन मिटावे और देव म्हाने दाय नी आवे
गुरु बिन कौन पिलावे ।
जब जब याद आवे गुरु हिरदे मै म्हाने पल-पल याद सतावे । गुरुजी याद
आपकी आवे ।

चरण 1. बैसाख मै भंवरा जो भटके बाग नजर न आवे ।
खिल रहे फूल लिफट रही कलियाँ भंवार बांस न लेवे ।। टैक

चरण 2. जे. तो गर्मी को महिनो जीव घणो दुखावे ।
आप साहेब सागर मै समाजा, म्हाने मिलिया से आनंद पावे ।। टैक

चरण 3. अषाड मै आसा म्हाने लागी और इन्द्र चढी ने आवे ।
मूसलधार बरसौ म्हारो स्वामी हेतु धापे घर आवे ।। टैक

चरण 4 सांवन मै साहेब घर आवे, सखियन मंगल गावे ।
आनंद मंगल बधावा रे गावे म्हारा सतगुरु को आन बधावे ।। टैक

चरण 5 भादो तो भक्ति को महिनो सतगुरु सैन बतावे ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ प्रेम अमीरस पावे ।। टैक

भजन क्रमांक 16

टैक   मनक क्मारा को यही मोड छो नी तो बन जावे चोरा सी को लाड़ो ।
मनारे कर तुमीरन # धन आड़ो ।। टैक

चरण 1. इनी धरम बेल के जुगत से सींचो पाप जड़ से काटो ।
काट्या बाल्या तो फेर फुटेगा जड़ा मुल से खोदो ।। टैक

चरण 2. लेता देता कई ढोंग पसारो कई भर लई जावोगा गाड़ो ।
अन्त तमय मैं चल्या जावोगा जलो दसेरा का पाड़ो ।। टैक

चरण 3. घर की तिरया से राजी राजी बोले और मात पिता से बोले आड़ो ।
घर की तिरया तो और मिलेगा मात पिता ना कोई आड़ो ।। टैक

चरण 4. सात गुन पर महा गुन है वहाँ सहाय निरो ठाड़ो ।
कहे कबीर सुनो भई साधो धर्म चलेगा # अगाड़ो ।। टैक

भजन क्रमांक 17

टैक :   साधु सौधो सबध मैं कनीयारी ।
बिना डोर जल भरे कुआ से बिना सीस की पनियारी ।। टैक

चरण 1. बिना खेत एक बाडी बोई बिन जल रेट चले भारी ।
बिना डोर जल भरे कुआ से बिना सिर की पनियारी ।। टैक

चरण 2. बिना# माली एक बाग लगायो बिन पत्ते एक बेल चली ।
बिन चोचके का मिरगला बाडी चुगता घडी-घडी ।। टैक

चरण 3. लेकर धनुष चला शिकारी नहीं धनुष पर चाँप चढ़ी ।
मिरगा मार धरनी पर डारा नहीं मिरग को चोंट लगी ।। टैक

चरण 4. बिन अन जल बऊ भोजन बनावे सोल नमन को बहु प्यारी ।
भोजन देख भुख भगी पिया की चतर नार की चतुराई ।। टैक

चरण 5. बिन तलवार से लडे सिपाही कतल करे दोनो भाई ।
कहे कबीर सुनो भई साधो अमरापुर # की तैयारी ।। # टैक

भजन क्रमांक 18

टैक थारा मन के मनाई ले हो ।
मन के मनाई ले इसे समझाई ले ।। टैक

चरण 1. दारू मत पीजे बीरा नशों तो घणो आवेगो ।
ई जहर का प्याला कैसे पीयोगा म्हारा बीर ।। टैक

चरण 2. वेद पुराण की गाठरिया मत बान्दो हो जी ।
अरे थारा गुल हाथ नी आवेगा म्हारा बीर ।। टैक

चरण 3. कोरी-कोरी आँख मैं काजलो मत मेलो जी ।
थारे नैणारी रूप बिगाडीयों म्हारा बीर ।। टैक

चरण 4. हाथ माय दीवलो दफोरया मैं नी सुझे हो जी ।
अब तम रैण अंधेरी मैं कैसे चलो म्हारा बीर ।। टैक

चरण 5 पराई नार की सैंगत मती करना है हो जी ।
अरे थारी लछीजी मैं दाग लगावे है जी ।। टैक

चरण 6. बडा भाई की नार माता कर मानो हो जी ।
थारी जिंदगी सफल बनावे हो जी ।। टैक

चरण 7. दौईकर जोड सती स्यार राणी बोले हो जी ।
या तो भारी हुकमजी की चेली हूँ म्हारा बीर ।। टैक